आज जो तुम
पर हंस रहे है
कल वही लोग
तुम्हारा गुणगान करेंगे।
– अज्ञात

मुंह पर मास्क लगाए स्कूल जाते बच्चे

इन देशों में गर्मी की छुट्टियां समाप्त होने के बाद पहली बार स्कूल खोले गए हैं और अभिभावकों ने भी एक हद तक इत्मीनान हो जाने के बाद बच्चों को स्कूल भेजने का फैसला किया है। यह कहने का मकसद अपने देश में बीमारी की स्थिति को हल्का करके आंकना नहीं है।

मनोज सिंह।।

कोरोना से जूझ रही दुनिया ने बीते मंगलवार को एक दिलकश नजारा देखा। रूस और चीन के अलावा कई यूरोपीय देशों में भी लाखों बच्चे मुंह पर मास्क लगाए स्कूल जाते देखे गए। इन देशों में गर्मी की छुट्टियां समाप्त होने के बाद पहली बार स्कूल खोले गए हैं और अभिभावकों ने भी एक हद तक इत्मीनान हो जाने के बाद बच्चों को स्कूल भेजने का फैसला किया है।

खास बात यह कि इन सभी देशों में कोरोना पर अभी पूरी तरह काबू नहीं पाया जा सका है। संक्रमितों की संख्या लगातार कम हो रही है और कहीं–कहीं यह नगण्य हो चली है, फिर भी नए केस के खाते में शून्य अभी कहीं नहीं लिखा जा रहा। चीन का वूहान शहर तो कोरोना वायरस का उद्गम स्थल ही था और पहले दो–तीन महीनों में यही पूरी दुनिया में इस बीमारी से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाला शहर था।

चीन ने कोरोना के प्रकोप के दो दौर देखे। पहली बार में काफी हद तक काबू पा लेने के बाद जब यह सोचा जा रहा था कि देश इससे मुक्त हो चुका है, तभी दोबारा नए–नए केस आने लगे और मरीजों की संख्या बढ़ गई। बहरहाल, दूसरी बार भी इसे नियंत्रित किया गया और लगभग दो महीने के गैप में पूरी तरह आश्वस्त हो जाने के बाद वूहान के स्कूलों ने बच्चों का खुले दिल से स्वागत किया। रूस भी लगभग दो महीने तक कोरोना से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले देशों में था। सघन परीक्षणों के जरिये इसने भी बीमारी पर काफी हद तक काबू पाया है, लेकिन साढ़े चार हजार से ऊपर नए केस अब भी रोज आ रहे हैं। अन्य देशों में भी तकरीबन यही हाल है, इसके बावजूद इन देशों ने स्कूल खोलकर बच्चों को पूरे एहतियात के साथ घर से निकलने और सामान्य जिंदगी की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। इससे एक बात जाहिर होती है कि कोरोना चाहे कितनी भी खतरनाक बीमारी हो लेकिन हम उस पर काबू पाने की ओर बढ़ रहे हैं और आने वाले कुछ ही दिनों–महीनों में हम इसे परास्त कर देंगे। यह कहने का मकसद अपने देश में बीमारी की स्थिति को हल्का करके आंकना नहीं है।

दुनिया में सबसे ज्यादा नए केस अभी भारत में ही आ रहे हैं और मौतों की संख्या भी चिंताजनक है लेकिन बीमारी के खिलाफ हम बाकी देशों जैसी ही रणनीति अपनाकर बढ़ रहे हैं– अधिक से अधिक टेस्ट, आइसोलेशन, क्वारंटीन और जरूरत पड़ने पर अस्पताल में इलाज। हालांकि हमारे स्वास्थ्य तंत्र की अपनी सीमाएं हैं। हमारी टेस्ट संख्या काफी ज्यादा होते हुए भी विकसित देशों की तुलना में आनुपातिक रूप से कम है। स्कूल खोलने की स्थिति में हम अभी नहीं हैं, पर मेट्रो तो शुरू कर ही रहे हैं। इस लंबी लड़ाई के दौरान यह भरोसा हमें हर पल बनाए रखना होगा कि कदम–दर–कदम हम जीत की ओर बढ़ रहे हैं और इस यात्रा में धैर्य ही हमारा अकेला मित्र है।

परिवार का साथ

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

वर्ष में दो नहीं तो एक बार पारिवार के साथ कहीं दूर किसी समुद्र के किनारे या किसी तीर्थ स्थल पर घुमने जाएं। ऐसी जगह पर न जाए जहां जाकर आपको पछताना पड़े।

जाने से पूर्व पहले से ही प्लानिंग करके जाएं और यात्रा मार्ग को अच्छी तरह से समझ कर जाएं। उचित वाहन और सुरक्षा के साथ जाएं। संपूर्ण यात्रा मार्ग में खुशियां और रोमांच के लिए आप अच्छे से योजना बना सकते हैं। आपके परिवार के साथ आपके मित्र या पड़ोसी का किसी रिश्तेदार का पारिवार भी होता तो यात्रा का आनंद दोगुना हो जाएगा। ऐसे में आपको सुरक्षा का अहसास भी होगा।

संपादकीय

ठंडे नहीं पड़े तेवर

सोनिया गांधी द्वारा पार्टी फोरम में बात रखने का निर्देश देने के बावजूद ये नेता लगातार बयान देकर मामले को गरमाए हुए हैं। कपिल सिब्बल का 'बात यहां पद की नहीं, मेरे देश की है' वाला बयान हो, या जितिन प्रसाद के खिलाफ यूपी में अनुशासनात्मक कार्रवाई को लेकर हुई सामूहिक मांग पर उनकी तीखी प्रतिक्रिया या फिर आजाद जैसे नेता का 'कांग्रेस के 50 साल तक विपक्ष में बैठने' वाला बयान– सब कहीं न कहीं यह दिखाते हैं कि यह खेमा फिलहाल खामोश बैठने वाला नहीं है। जिस तरह से पूर्व केंद्रीय मंत्री मनीष तिवारी ने हाल ही में वेदों से लेकर भारतीय मनीषा व विश्व इतिहास में असहमति के महत्व को दर्शाते हुए लेख लिखा है, वह भी कहीं न कहीं यह बताने की कोशिश है कि पार्टी नेतृत्व को लिखी चिठ्ठी भी उसी आईने से देखी जाए। सूत्रों के मुताबिक यह खेमा न सिर्फ हाई कमान के फैसलों और उनकी गतिविधियों पर नजर रखे है, बल्कि कहीं न कहीं अपनी आगे की रणनीति भी बना रहा है। कहा जाता है कि इनमें से कुछ सीनियर नेताओं ने एक छोटा सा रणनीतिक समूह बनाया है, जो आगे की रणनीति तय करेगा। यह खेमा लगातार आपस में मिल रहा है, आगे की राह और रणनीति पर चर्चा कर रहा है। इतना ही नहीं, यह खेमा भीतर ही भीतर पार्टी में और भी तटस्थ लोगों को टटोल रहा है। उल्लेखनीय है कि इनमें से तमाम नेता ऐसे हैं, जिनके पास अपना राजनीतिक वर्चस्व दिखाने का आखिरी मौका है।

मुख्य विपक्षी पार्टी होने के नाते संपूर्ण विपक्ष को उससे नेतृत्व की उम्मीद रहती है, लेकिन मुख्य पार्टी खुद नेतृत्व के संकट से जूझ रही है। बीजेपी तो पहले से ही कांग्रेसी कुनबे में आई फूट का मजा ले रही है।

संतुष्टों को संकेत की कोशिश

मंजरी चतुर्वेदी।।

चिट्ठी कांड के बाद हुई कांग्रेस वर्किंग कमिटी (सीडब्ल्यूसी) की बैठक लंबी–चौड़ी उठापटक के बाद 'ऑल इज वेल' के भाव के साथ खत्म हुई। पर इस बैठक के बाद से अब तक पार्टी के अलग–अलग खेमों से जो तेवर सामने आ रहे हैं, उससे साफ है कि कांग्रेस के भीतर 'ऑल इज वेल' नहीं है। जिस तरह से चिट्ठी लिखने वाले असंतुष्टों के बयान आ रहे हैं और दूसरी तरफ जिस तरह से पिछले कुछ दिनों में शीर्ष नेतृत्व के कुछ फैसले आए हैं, पार्टी में संगठित रूप से इन असंतुष्टों के खिलाफ कार्रवाई की मांग उठ रही है, उससे साफ है कि पार्टी के भीतर खाई लगातार गहरी हो रही है। पार्टीजनों के बीच बढ़ती दूरियां किसी भी लिहाज से पार्टी की सेहत के लिए ठीक नहीं मानी जा सकतीं।

इसी महीने संसद का मॉनसून सत्र होने वाला है, जब उम्मीद की जा रही थी कि पार्टी मजबूती के साथ कोविड–19, भारत–चीन सीमा विवाद व इकॉनमी जैसे अहम मुद्दों पर सरकार को घेरने का काम करेगी लेकिन पालों में बंटे नेताओं और टूटे मनोबल के बीच उससे ऐसी उम्मीद ही बेमानी हो गई है। गुलाम नबी आजाद, आनंद शर्मा, कपिल सिब्बल, विवेक तन्खा, राज बब्बर, मनीष तिवारी, शशि थरूर जैसे नेता, जो सदन

के अंदर पार्टी के खेवनहार होते रहे हैं, वे पार्टी पर 'लेटर बम' गिराने वालों में शामिल हैं। पार्टी के अंदर ही उनकी निष्ठा पर सवाल उठ रहे हैं। ऐसे में ये नेता सदन के अंदर सरकार को घेरने में कितनी दिलचस्पी दिखाएंगे या उनके प्रयासों पर पार्टी को कितना भरोसा होगा, यह आम सवाल बन चुका है। मुख्य विपक्षी पार्टी होने के नाते संपूर्ण विपक्ष को उससे नेतृत्व की उम्मीद रहती है, लेकिन मुख्य पार्टी खुद नेतृत्व के संकट से जूझ रही है। बीजेपी तो पहले से ही कांग्रेसी कुनबे में आई फूट का मजा ले रही है।

सीडब्ल्यूसी मीटिंग के बाद पार्टी ने विभिन्न अध्यादेशों पर अपना रुख और लोकसभा में नेतृत्व को लेकर दो समितियां बनाई। इन समितियों के गठन में असंतुष्ट नेताओं की अनदेखी साफतौर पर नजर आ रही है। अध्यादेश वाली समिति में राज्यसभा से आजाद और आनंद शर्मा जैसे विपक्ष के नेता–उपनेता को छोड़कर पी चिदंबरम, जयराम रमेश व दिग्विजय सिंह को रखा गया है। वहीं लोकसभा में शशि थरूर और मनीष तिवारी जैसे सीनियर नेताओं के होते हुए गौरव गोगोई व अमर सिंह जैसे सांसदों को रखा गया। इतना ही नहीं, गोगोई को लोकसभा में पार्टी का उपनेता और रवनीत सिंह बिट्टू जैसे युवा को व्हिप बनाना भी बताता है कि हाई कमान खत लिखने वाले नेताओं पर ज्यादा भरोसा करने को तैयार नहीं है। जिस तरह से कांग्रेस के भीतर चिट्ठी लिखने को सीधे–सीधे शीर्ष नेतृत्व के खिलाफ बगावत के तौर पर देखा जा रहा है, उससे साफ है कि कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा सीडब्ल्यूसी बैठक में दिए गए संदेश 'जो हुआ, उसे भूलकर आगे बढ़ें' का कोई खास मतलब नहीं है।

पार्टी के भीतर असंतुष्टों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग से भी खाई गहरा रही है। हालांकि सीडब्ल्यूसी की बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष की मदद के लिए जिस सिस्टम को बनाने की बात हो रही थी, उसे लेकर भी पार्टी के भीतर की चुप्पी कहीं न कहीं असंतुष्टों को परेशान कर रही है। दरअसल, चिट्ठी में सामूहिक नेतृत्व की भी मांग की गई थी। कहा जा रहा था कि इस खेमे को शांत करने के लिए ऐसा कोई सिस्टम बनाया जा सकता है। बताया जाता है कि इन असंतुष्टों की अपेक्षा है कि इस सिस्टम में अगर उनके दो से तीन सदस्यों को भी जगह मिल गई, तो रणनीतिक फैसलों में उनका वजन बढ़ जाएगा।

सूडोकु नवताल-5465

मध्यम

8		4	3	9	7	5		6
3					2			
		7	6	5				4
9	6		5			1		7
5		1	4		9	8		2
4		8					5	3
2				6	1	4		
			7					8
7		9	8	3	5	6		1

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5464 का हल

7	8	4	9	5	2	6	1	3
9	6	2	4	3	1	8	5	7
1	3	5	7	8	6	2	4	9
4	2	3	6	1	5	9	7	8
8	5	9	2	4	7	1	3	6
6	7	1	3	9	8	4	2	5
3	1	7	8	6	4	5	9	2
5	9	6	1	2	3	7	8	4
2	4	8	5	7	9	3	6	1

अपना ब्लॉग

आजादी' में अहम हिस्सा रहे

मोहन। सोचिए! जिस खुशी से आज आप जिंदगी की 'आजादी' महसूस कर रहे हैं, कहीं उस 'आजादी' में अहम हिस्सा रहे अपने किसी करीबी को आप तकलीफ तो नहीं दे रहे। सोचिएगा और उनकी शहादत का सम्मान करिएगा, शायद यही सम्मान 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाने वालों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। हमें सहिष्णुता बचाकर रखनी होगी, वैचारिक वाद–संवाद में किसी की निजता का हनन नहीं करना चाहिए, ऐसा करने से सिर्फ कटुता बढ़ती है, जो पूर्व की स्थिति के विपरीत सिर्फ राष्ट्रीय एकात्मता को नुकसान पहुंचाती है। इससे उनकी जान भले ही बच गई, मगर उनका इकबाल जाता रहा। आगे चलकर उन्होंने इसकी भारी कीमत चुकाई। गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने युद्ध का दोषी करार देकर उन पर पचास लाख रुपयों का हर्जाना लगा दिया।